

Research Article

अनौपचारिक शिक्षा से औपचारिक शिक्षा की ओर: गुरुकुल से आधुनिक संस्थानों तक

Rajat Kaushik¹, Susheel Kurmi², Amit Mahato³, Sudhanshu Aggarwal⁴

^{1,2,3}Regioanl Institute of Education, NCERT, Bhopal, Madhya Pradesh, India

⁴Department of Mathematics, National Post Graduate College, Barhalganj, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.24321/2456.0510.202611>

I N F O

Corresponding Author:

Sudhanshu Aggarwal, Department of Mathematics, National Post Graduate College, Barhalganj, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.

E-mail Id:

sudhanshu30187@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0000-0001-6324-1539>

How to cite this article:

रजत कौशिक, सुशील कुर्मी, अमित महतो & सुधांशु अग्रवाल, अनौपचारिक शिक्षा से औपचारिक शिक्षा की ओर: गुरुकुल से आधुनिक संस्थानों तक, Anu: a, Mul, Int, Jour, Vol 11, 2026 (Special Issue): Pg. No. 29-34

Date of Submission: 2026-03-05

Date of Acceptance: 2026-04-04

A B S T R A C T

यदि हम भारतीय शिक्षा प्रणाली की बात करें, तो यह न केवल प्राचीन है अपितु निरंतर प्रवाहित होती रही है, इसके मूल में जहाँ हम गुरुकुल परंपरा को देखते हैं, वहीं, आधुनिक दौर में एक औपचारिक व संस्थागत शिक्षा प्रणाली का विकास प्रतिलक्षित होता है। अतीत में, "गुरु-शिष्य परंपरा" का अनौपचारिक शिक्षा पर बहुत गहरा प्रभाव था। इस प्रकार की शिक्षा में, गुरु-गृह ही छात्रों का घर होता था, जहाँ वे पढ़ाई, दैनिकजीवन तथा अध्ययन कार्य करते थे। इस शिक्षा का प्रारंभिक उद्देश्य मात्र छात्रों के बौद्धिक विकास तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्हें नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक जीवन कौशल विकसित करने में मदद करना भी था। प्राचीन काल में अनुभव आधारित शिक्षा का प्रचलन था जिसमें विद्यार्थी अभ्यास तथा दूसरों से प्रेरित होकर विषयवस्तु सीखते थे तथा उसी से जीवन कौशल उन्मुख शिक्षा का भी विकास संभव हुआ। जैसे-जैसे समय बीतता गया, शैक्षिक प्रणाली में बहुत बदलाव आया बाकी सामाजिक कानून-बाना अधिक कठोर हो चला, प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान अपने चरमावस्था में जा पहुँचा। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी कुछ ऐसे शुरुआती शिक्षण संस्थान थे, जहाँ छात्रों को बेहद व्यवस्थित और क्रमबद्ध तरीके से शिक्षा दी जाती थी, अक्सर बौद्धिक चर्चाओं के माध्यम से। गणित का अध्ययन, इसे सीखना एवं समझना परिपक्वता की निशानी बनी। अतीत में मानव पारस्परिक चर्चा के माध्यम से गणित में रुचि लेते, इस गणित को प्रायः कृषि व्यापार तथा धार्मिक कार्यों में प्रयोक्त किया जाता परंतु समय बदला और आधुनिक दौर में गणितीय प्रयोग अधिक औपचारिक और विश्लेषणात्मक बन गया इस दौर में हमने सांकेतिक भाषा और प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया। इस प्रकार, मैकाले की शिक्षा नीति ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारत के स्कूलों के कामकाज के तरीके को बदल दिया, जिससे वे पाठ्यक्रम, परीक्षाओं और संस्थागत ढाँचों पर अधिक केंद्रित हो गए। भारत की स्वतंत्रता के बाद, जवाहरलाल नेहरू ने वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा को अधिक व्यापक रूप से उपलब्ध कराने के प्रयासों का नेतृत्व किया। इससे उच्च शिक्षा प्रणाली अधिक सुदृढ़ और उपयोगी बनी। यह शोध पत्र अनौपचारिक से औपचारिक शिक्षा की ओर हुए संक्रमण की पड़ताल करता है, और यह दर्शाता है कि शैक्षिक प्रतिमानों के विकास के बावजूद, 'गुरु-शिष्य' (शिक्षक-छात्र) संबंध का मूल सार भारतीय शैक्षिक प्रणाली की आधारशिला के रूप में आज भी कायम है।

मुख्य शब्द: गुरुकुल प्रणाली, अनौपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा, गणित शिक्षा, भारतीय शिक्षा प्रणाली, आधुनिक शिक्षा, शैक्षिक संक्रमण

प्रस्तावना

यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि शिक्षा मनुष्य के समग्र विकास का अभिन्न अंग है।¹ शिक्षा न केवल मनुष्य को नई-नई चीजें सिखाती है, बल्कि उसके बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को भी सुदृढ़ करती है।² एक शिक्षित व्यक्ति अपनी जीविका को अच्छे ढंग से चलाने के साथ-साथ देश और समाज की प्रगति में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। शिक्षा का महत्वपूर्ण और सुस्पष्ट लक्ष्य मात्र ज्ञानार्जन नहीं अपितु अच्छी चीजों की खोज करना, उन्हें अपने जीवन में लागू करना, उत्तम संस्कार विकसित करना और एक आदर्श व्यक्ति के रूप में स्वयं की पहचान बनाना है।

अतः शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य चारों ओर फैली समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने के साथ-साथ अपनी तर्कशक्ति को भी विकसित करता है। लेकिन शिक्षा का महत्व केवल इसी तक सीमित नहीं है; यह किसी व्यक्ति के चरित्र को गढ़ने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा लोगों में ईमानदारी, अनुशासन, सहिष्णुता और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित विकसित करने में सहायता प्रदान करती है, जिससे एक श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण होता है। कबीर ने सत्य ही कहा है

“पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥”

शिक्षा ही मनुष्य में भाईचारे और सद्भाव की भावना उत्पन्न करती है, जिससे उनका सामूहिक विकास संभव हो पाता है।³ वर्तमान के वैश्विक और विविधतापूर्ण संसार में विभिन्न संस्कृतियों, विचारों तथा रीति-रिवाजों का सम्मान करना भी शिक्षा ही सिखाती है। शिक्षा व्यक्तियों में सह-अस्तित्व, सहयोग और सामुदायिक भावना की गहरी समझ पैदा करती है, जिससे सामाजिक सद्भाव और शांति बनी रहती है। सत्य ही है

“विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥”

नैतिक विकास भी शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता प्रदान करती है। यह उन्हें जीवन में अच्छे निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करती है और एक सुदृढ़ नैतिक चरित्र विकसित करने में उनकी सहायता करती है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा न केवल ज्ञानार्जन का साधन है, बल्कि एक मार्गदर्शक शक्ति भी है, जो मनुष्य को उचित पथ की ओर अग्रसर करती है।⁴

भारत में शिक्षा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। प्राचीन काल में लोग गुरुकुल व्यवस्था से प्रभावित थे और उसी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते थे, जिसमें न केवल शास्त्रों के अध्ययन पर, बल्कि जीवन जीने के सही तरीके, आत्म-अनुशासन, ब्रह्मचर्य, प्रकृति के साथ सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को भी पूर्ण रूप से महत्व दिया जाता था।⁵ अन्यत्र ही कहा गया है

“ब्रह्मचारी ब्रह्म भाजष विभर्ति,
तस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदः।”

वेदांत, बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन ऐसे प्रमुख सिद्धांत हैं, जिन्होंने भारतीय शैक्षिक दर्शन को गहराई से समृद्ध किया है। वर्तमान में शिक्षा का मुख्य लक्ष्य ऐसे मनुष्य का निर्माण करना है, जिसमें बुद्धि, नैतिकता, संवेदनशीलता तथा सामाजिकता के गुण विद्यमान हों। अतः शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति सुदृढ़, जागरूक और सफल समाज का निर्माण करता है। पूर्ववर्ती भारतीय सभ्यता में शिक्षा न केवल व्यक्ति की बुद्धिमत्ता को विकसित करती थी, बल्कि उसे दायित्वपूर्ण, नैतिक रूप से अडिग और स्वावलंबी भी बनाती थी। गुरुकुल व्यवस्था ने शिक्षा को मनुष्य के जीवन में इस प्रकार समाहित कर दिया था कि ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया प्रतिदिन की दिनचर्या का स्वाभाविक हिस्सा बन गई।⁶ इसके फलस्वरूप छात्रों को अनुशासन, अनुभव और मूल्यों से परिपूर्ण उज्ज्वल भविष्य प्राप्त करने का अवसर मिलता था। इसके विपरीत, वर्तमान शिक्षा प्रणाली पहले की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित, संगठित और शैक्षिक सामग्री-केंद्रित हो गई है। यह व्यक्ति को नई-नई जानकारीयों अर्जित करने के साथ-साथ कार्यों को अधिक कुशल और उत्तम ढंग से करने में सक्षम बनाती है। इसके परिणामस्वरूप, संसार के परिवर्तित स्वरूप, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास तथा वैश्वीकरण ने शिक्षा को गहराई से प्रभावित किया है। समकालीन औपचारिक शिक्षा प्रणाली, शिक्षा के प्रसार हेतु अपनाई जाने वाली शिक्षण-पद्धतियों को भी काफी हद तक प्रभावित करती है।⁷

शोध के उद्देश्य

1. भारतीय शिक्षा के विकास को समझना, अनौपचारिक गुरुकुल प्रणाली से लेकर औपचारिक समकालीन शिक्षा प्रणाली तक।
2. प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में उपयोग की जाने वाली शिक्षण की विशेषताओं और विधियों के बारे में जानना।
3. तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों के स्कूलों और उनके योगदान के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
4. यह समझना कि औपनिवेशिक काल के दौरान शिक्षा किस प्रकार अधिक व्यवस्थित हुई और मैकाले की शैक्षिक नीतियां क्यों महत्वपूर्ण थीं।
5. शिक्षा व्यवस्था में इस प्रकार का परिवर्तन हुआ है, जिससे वह अब वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमताओं के विकास पर केंद्रित हो गई है।
6. गणित की शिक्षा में वर्षों के दौरान आए बदलावों का अतीत के व्यावहारिक और प्रायोगिक दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. शिक्षण की प्राचीन और नवीन पद्धतियों के बीच समानताएं और अंतर ज्ञात करना।
8. आज के आधुनिक विश्व में "गुरु-शिष्य" (शिक्षक-शिष्य) परंपरा के महत्व और उसकी भूमिका का अवलोकन करना।

शोध विधि

शोधकर्ता का यह अध्ययन प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। यह अध्ययन आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में, इन दोनों प्रणालियों की प्रासंगिकता की पड़ताल करता है। परिणामस्वरूप, इस अध्ययन को संपन्न करने हेतु शोधकर्ताओं ने दार्शनिक, ऐतिहासिक और विषय-वस्तु विश्लेषण जैसी पद्धतियों का उपयोग किया है।⁸

गुरुकुल प्रणाली: अनौपचारिक शिक्षा का जीवन-केंद्रित स्वरूप

गुरुकुल प्रणाली हमारी प्राचीन भारतीय शिक्षा का आधार थी। इसने सीखने और साथ रहने को इस तरह से जोड़ा था कि उन्हें विभाजित कर पाना संभव नहीं था। यह ज्ञान प्रदान करने और ज्ञान अर्जित करने की एक सामान्य, किंतु अत्यंत प्रभावशाली प्रक्रिया थी। शिष्य गुरु के आश्रय में रहते थे, जहाँ वे पुस्तक-ज्ञान के साथ-साथ उनके व्यवहार और आचरण को भी अपनाते थे।⁹ गुरु-शिष्य संबंध केवल शास्त्रीय ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें परिश्रम, सेवा, आत्मनिर्भरता तथा समाज के प्रति जिम्मेदारी जैसे गुणों का भी समावेश होता था। इस व्यवस्था का उद्देश्य मनुष्य को केवल रोजगार हेतु तैयार करना नहीं था, बल्कि उसे जीवन-मूल्यों का ज्ञान प्रदान करना था। कबीर ने तो यहाँ तक कहा है

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

उस समय प्रायः गुरु शिष्यों को मौखिक रूप से ही शिक्षा प्रदान करते थे। इसी कारण वे वार्तालाप, कथाओं तथा रोचक प्रसंगों के माध्यम से अपनी बात विद्यार्थियों तक पहुँचाते थे। विद्यार्थी भी केवल बातों को कंठस्थ करने तक सीमित नहीं रहते थे, बल्कि उन्हें भली-भाँति समझने का प्रयास करते थे।

प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षण पद्धति एवं गणित का विकास

प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों ने शिक्षा को एक अनौपचारिक स्तर से उठाकर उसे एक व्यवस्थित और संस्थागत रूप प्रदान किया। शिक्षा प्रणाली को अधिक औपचारिक बनाने की दिशा में यह एक बहुत बड़ा कदम था।

तक्षशिला, शिक्षा प्रणाली की प्रमुख संस्था थी जिसमें छात्रों को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सक्रिय माना जाता था।⁹ यहाँ शिक्षक न केवल उन्हें आत्मविश्वास के साथ विषय समझाते थे, बल्कि प्रश्न पूछने, चर्चा करने तथा तर्क-वितर्क करने के लिए भी प्रोत्साहित करते थे। यहाँ की शिक्षा पूर्णतः औपचारिक न होकर व्यवस्थित एवं व्यावहारिक थी। इस संस्थान में विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ विभाग स्थापित थे, जिससे छात्रों को अपने रुचिकर विषयों को गहराई से समझने का अवसर प्राप्त होता था।

नालंदा विश्वविद्यालय औपचारिक शिक्षा का साक्षात् प्रतिरूप था। यहाँ की शिक्षण शैली अधिक व्यवस्थित, क्रमबद्ध और अनुसंधान-उन्मुख थी।¹⁰ नालंदा में एक विशाल पुस्तकालय था, जहाँ गणित तथा अन्य क्षेत्रों से संबंधित लिखित ज्ञान को संरक्षित और समृद्ध किया जाता था। परिणामस्वरूप, शिक्षा का स्वरूप मौखिक परंपराओं पर आधारित होने के बजाय लिखित और विश्लेषणात्मक अधिगम को समाहित करने वाला बन गया। छात्रों ने गणित, खगोलशास्त्र और तर्कशास्त्र का गहन अध्ययन किया, जिससे उनकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हुई और वे तर्क-वितर्क तथा विश्लेषणात्मक चिंतन में अधिक निपुण हो गए।

विक्रमशिला और वल्लभी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य छात्रों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक चिंतन कौशल के साथ-साथ समस्या-समाधान की क्षमता का विकास करना था।¹¹ यहाँ वाद-विवाद और तर्कशास्त्र पर विशेष बल दिया जाता था, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्र केवल तथ्यों को रटें ही नहीं, बल्कि उनमें आलोचनात्मक ढंग से सोचने और उनका विश्लेषण करने की क्षमता भी विकसित हो। गणित, तर्कशास्त्र के साथ अपने घनिष्ठ जुड़ाव के कारण, एक उच्च-स्तरीय बौद्धिक विषय के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

औपनिवेशिक काल में शिक्षा का औपचारिककरण एवं गणित का पुनर्गठन

औपनिवेशिक काल के दौरान शिक्षा की व्यवस्था में बड़े बदलाव आए। यह वह समय था जब शिक्षा अधिक व्यवस्थित हो गई, और गणित पढ़ाने का तरीका भी बदल गया। भारतीय शिक्षा प्रणाली के इतिहास में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी दौर था। इस दौरान, शिक्षण के लक्ष्यों, विधियों और प्रक्रियाओं में व्यापक परिवर्तन हुए। इस बदलाव का मुख्य कारण 1835 की मैकाले की शिक्षा नीति थी।¹² इस नीति के परिणामस्वरूप भारतीय विद्यालयों में पाश्चात्य ज्ञान, अंग्रेजी भाषा और तर्क-आधारित चिंतन शैली का प्रसार हुआ। इस प्रकार की नीतियों का उद्देश्य एक ऐसे शिक्षित वर्ग का निर्माण करना था, जो औपनिवेशिक सरकार के लिए कार्य करने के साथ-साथ पूरे समाज में पाश्चात्य विचारों का भी प्रसार कर सके। इसी काल में शिक्षा प्रणाली को सर्वप्रथम एक औपचारिक और सुव्यवस्थित ढाँचा प्राप्त हुआ। इसमें निश्चित समय-सारिणी, पाठ्यपुस्तकें और विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु परीक्षाओं की व्यवस्था की गई।

साथ ही, पाठ्यक्रम पर आधारित शिक्षण-प्रक्रिया को अपनाया गया। परिणामस्वरूप, शिक्षा अधिक व्यवस्थित, विनियमित और संस्थागत रूप धारण कर गई। तथापि, इस प्रक्रिया के दौरान, पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों और मूल्य-आधारित शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। इसी काल में, गणित शिक्षण की पद्धति में भी व्यापक बदलाव किए गए। गणित को पाठ्यक्रम में एक पृथक एवं अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया गया। बीजगणित, ज्यामिति और अंकगणित का शिक्षण एक सुनियोजित और क्रमबद्ध पद्धति के अनुसार किया जाने लगा। इसके परिणामस्वरूप, गणित का वास्तविक जीवन के व्यावहारिक उपयोगों से जुड़ाव समाप्त हो गया, और इसके स्थान पर यह एक सैद्धांतिक, प्रतीकात्मक और विश्लेषणात्मक विषय बनकर रह गया। इस प्रकार, औपनिवेशिक काल के दौरान, भारतीय शिक्षा औपचारिककरण, संरचनात्मक संगठन और आधुनिक विषय-क्षेत्रों की ओर अग्रसर हुई, यद्यपि इस प्रक्रिया में पारंपरिक शिक्षा के अनेक महत्वपूर्ण तत्व विलुप्त होते चले गए।

स्वतंत्र भारत में आधुनिक शिक्षा एवं गणित का विस्तार

भारत के आज़ाद होने के बाद, शिक्षा को राष्ट्र निर्माण, समाज सुधार और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के एक साधन के रूप में फिर से परिभाषित किया गया। शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके में भी बड़े बदलाव किए गए। जवाहरलाल नेहरू ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के विकास के लिए विशेष प्रयास किए। इसी उद्देश्य से उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IITs) तथा अन्य विश्वविद्यालयों की स्थापना को बढ़ावा दिया, ताकि देश को एक वैश्विक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित किया जा सके।

इसी काल में शिक्षा के अधिकार को भी लोकतांत्रिक व्यवस्था से जोड़ा गया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(ए) के अंतर्गत शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई, जिससे प्रत्येक नागरिक को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सुनिश्चित हुआ।¹³ शिक्षा की ऐसी व्यवस्था विकसित की गई, जिससे सभी स्तरों पर बुनियादी उन्नति सुनिश्चित हो सके। प्रारंभ से ही गणित को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व दिया गया, क्योंकि इसके अध्ययन से विद्यार्थियों की तार्किक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा समस्या-समाधान कौशल का विकास होता है।

वर्तमान में प्रौद्योगिकी के विकास के कारण सभी विषयों को अधिक सुव्यवस्थित और प्रभावी ढंग से पढ़ाने के अवसर प्राप्त हुए हैं। किसी ने सत्य कहा है

“नव विज्ञान के साथ अब, बदली शिक्षा रीति।
सरल, सशक्त बनी, प्रौद्योगिकी विकास की प्रीति॥”

आधुनिक समय में, कंप्यूटर, स्मार्ट बोर्ड, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन शिक्षण विधियों ने गणित को एक इंटरैक्टिव और उपयोगी विषय बना दिया है।¹⁴ इसलिए, हम कह सकते हैं कि स्वतंत्र भारत में शिक्षा प्रणाली अपनी पुरानी सीमाओं से आगे निकल गई है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ भारत निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है तथा वैश्विक स्तर पर अन्य देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए सदैव तत्पर बना हुआ है।

गुरु-शिष्य परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता

भारत में गुरु-शिष्य परंपरा बहुत लंबे समय से चली आ रही है। यह कहना उचित होगा कि गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा पद्धति का अभिन्न अंग रही है। प्राचीन काल से ही शिक्षा का आदान-प्रदान इसी व्यवस्था के माध्यम से होता आया है। इस प्रणाली में गुरु न केवल शिष्य को ज्ञान प्रदान करते थे, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वे शिष्यों को उत्तम, चरित्रवान एवं जिम्मेदार व्यक्तित्व बनाने का दायित्व निभाते थे।¹⁵ इस शिक्षा पद्धति का उद्देश्य केवल धन अर्जित करना नहीं था, बल्कि जीवन को सार्थक एवं मूल्यवान बनाना था; इसी भावना से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे, फिर भी गुरु और शिष्य के बीच का बंधन आज भी अत्यंत सुदृढ़ है। कबीर का यह दोहा आज भी सार्थक है

“गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥”

अतः आज के इस दौर में भी, शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों को केवल उनका स्कूली पाठ्यक्रम पूरा करवाने में ही सहायता न करें, उनसे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-विकास में सहायक बनें, उन्हें करियर संबंधी उचित परामर्श दें और उन्हें एक बेहतर इंसान बनने में मदद करें। गणित जैसे विषयों में, जहाँ तार्किक चिंतन और निरंतर अभ्यास—दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, वहाँ शिक्षक की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। एक कुशल शिक्षक जटिल अवधारणाओं को भी सरल और सुगम बना देता है, जिससे विद्यार्थियों की अधिगम-क्षमता में वृद्धि होती है और वे अधिक सशक्त महसूस करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है यद्यपि वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो चुका है, अब यह अधिक औपचारिक, क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित तथा समकालीन पाठ्यक्रम के अनुरूप हो गई है।

निष्कर्ष

शिक्षा प्रणाली का विकास एक निरंतर और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो प्राचीन, अनौपचारिक गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक, औपचारिक और संस्थागत शैक्षिक ढांचे तक फैली हुई है। शिक्षा के विकास में सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी कारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिन्होंने शिक्षा के उद्देश्य, प्रणाली और स्वरूप को परिवर्तित किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि जहाँ पहले शिक्षा मुख्यतः मौखिक रूप से प्रदान की जाती थी, वहीं आधुनिक समय में यह तकनीक, वाद-विवाद, लेखन, संवाद तथा प्रायोगिक विधियों के माध्यम से अधिक प्रभावी और व्यापक रूप से दी जाने लगी है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली जीवन-मूल्यों, नैतिकता, 'करके सीखने' की पद्धति और गुरु-शिष्य (शिक्षक-शिष्य) संबंधों पर केंद्रित थी। इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी कौशल और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मकता पर बल देती है। प्रत्येक प्रणाली की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और चुनौतियाँ हैं। गणित की शिक्षा इस परिवर्तन का एक केंद्रीय अंग रही है। प्राचीन काल की व्यावहारिक और मौखिक परंपरा से विकसित होकर, आधुनिक काल में यह एक औपचारिक, सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक विषय के रूप में परिणत हो गई है। परिणामस्वरूप, शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत प्राचीन और समकालीन दृष्टिकोणों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना अनिवार्य है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करे, बल्कि नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के विकास को भी पोषित करे। इस संदर्भ में, यह दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है कि शिक्षण पद्धतियों के विकास के बावजूद, गुरु-शिष्य संबंधों का मूल मर्म ही समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. Mahmoudi, S., Jafari, E., Nasrabadi, H. A., & Liaghatdar, M. J. (2012). Holistic education: An approach for 21st century. *International Education Studies*, 5(3), 178–186. <https://doi.org/10.5539/ies.v5n3p178>
2. Srivastava, Y. K., & Tripathi, R. K. (2023). शिक्षकों के नवीन दृष्टिकोण और छात्रों की शैक्षिक प्रगति: एक समीक्षात्मक अध्ययन. *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education (JASRAE)*, 20(3). <https://doi.org/10.29070/hz5g4428>
3. Bohndick, C., Breetzke, J., Klingsieck, K. B., et al. (2025). *Students' personality impacts sense of belonging of students in different ways*. *Social Psychology of Education*, 28, 98. <https://doi.org/10.1007/s11218-025-10058-0>
4. Sharma, M., & Sheel, S. (2025). *Maharshi Aurobindo ke shaikshik darshan ka aadhunik shiksha pranali mein anuprayog*. *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science*, 7(3 II), 95–102

5. Khare, S. (2025). *Prachin Bharatiya gyan parampara ki aadhunikta*. International Journal for Multidisciplinary Research, 7(5), September–October.
6. Nilachal, P., & Bhavanani, A. B. (2023). *Enhancement of quality in students and teachers through improved curriculum and faculty development programmes based on ancient Indian teachings and yogic lifestyle*. Journal of Education Technology in Health Sciences, 10(3), 69–76. <https://doi.org/10.18231/j.jeths.2023.016>.
7. Ben-Peretz, M. (2011). *Teacher knowledge: What is it? How do we uncover it? What are its implications for schooling?* Teaching and Teacher Education, 27(1), 3–9. <https://doi.org/10.1016/j.tate.2010.07.015>
8. Socorro Márquez, F. O., Reyes Ortiz, G. E., & Torrez Meruvia, H. (2026). *Philosophical leadership in education: Rethinking pedagogy in an AI-driven world*. Social Sciences & Humanities Open, 13, 102699. <https://doi.org/10.1016/j.ssaho.2026.102699>
9. Chaturvedi, S. K. (2022). *Bharat ka prachintam vishvavidyalay Takshashila*. Vidhigam, 23, June.
10. Yadav, S. K. (2018). *Nalanda vishvavidyalay ke shaikshanik yogdanon ka vishleshanatmak adhyayan*. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 5(6), 622–624.
11. Rani, S. (2025). *Guptottar kaal mein shiksha aur gyan paramparao ke vikas ka vishleshan*. International Journal of History, 7(9), 1–4
12. Arya, A. K. (2023). *Lord Macaulay ke shiksha vivaran patra ka Bharat ki shiksha pranali par padne wale prabhav ka adhyayan*. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 10(9).
13. Shaji, N. (2025). *Right to education as a fundamental right under Article 21A of the Indian Constitution and its conflict with minority rights under Article 30(1)*. International Journal of Legal Studies and Social Sciences, 3(2), 595–603.
14. Haleem, A., Javaid, M., Qadri, M. A., & Suman, R. (2022). *Understanding the role of digital technologies in education: A review*. Sustainable Operations and Computers, 3, 275–285. <https://doi.org/10.1016/j.susoc.2022.05.004>
15. मीना, भारती. (2022). *मध्यकालीन भारत की शिक्षा व्यवस्था*. International Journal of History, 4(1), 51–55.